उपजाति छन्द

उपजाति छन्द की प्रकृति-

यह वार्णिक छन्द है।

उपजाति छन्द का लक्षण-

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।

अर्थात् जो छन्द इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के लक्षण से युक्त हों, उन्हें उपजाति छन्द कहते हैं।

उदाहरण-

कृताभिमर्षामनुमन्यमानः सुतां त्वया नाम मुनिर्विमान्यः।

मुष्टं प्रतिग्राहयता स्वमर्थं पात्रीकृतो दस्युरिवासि येन।।

अन्य उदाहरण-

साहित्यसङ्गीत कला-विहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।

तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद्भागधेयं परमं पशुनाम्॥

विशेष-

क) इसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर हैं।

ख) इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा का मिश्रण चौदह प्रकार से सम्भव है-

1. उ, इ, इ, इ; 2. इ, उ, इ, इ; 3. उ, उ, इ, इ; 4. इ, इ, उ, इ; 5. उ, इ, उ, इ; 6. इ, उ, उ, इ; 7. उ, उ, उ, इ; 8. इ, इ, इ, उ; 9. उ, इ, इ, उ; 10. इ, उ, इ, उ; 11. उ, उ, इ, उ; 12. इ, इ, उ, उ; 13. उ, इ, उ, उ; 14. इ, उ, उ, उ

Dhananjay Vasudeo Dwivedi